इकाई 5. महाकवि माघ का जीवन परिचय, समय एवं कृतियों का महत्व

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के इतिहास वर्णन क्रम से सम्बन्धित यह पॉचवी इकाई है। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने रामायण एवं महाभारत जैसे विशालकाय साहित्यिक ग्रन्थों तथा कालिदास से ही सम्बन्धित तथ्यों का संक्षिप्त अध्ययन किया है।

प्रस्तुत इकाई में परवर्ती कवियों की गणना श्रृंखला में उपमा तथा गौरव एवं पदलालित्य जैसे तीनों गुणों को एक साथ धारण करने वाले कवि माघ के व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। महाकवि माघ संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित कवि हैं। जिस प्रकार कालिदास उपमा के लिये प्रसिद्ध है, भारवि अपने अर्थगौरव वर्णन के लिये प्रसिद्ध है, दण्डी अपने रचनाओं में लालित्य प्रयोग के लिये प्रसिद्ध है। उसी प्रकार माघ उपर्युक्त तीनों गुणों के लिये समन्वित रूप से प्रसिद्ध है। इनके विषय में कहा जाता है कि - नवसर्ग गतेमाघे नव शब्दो न विद्यते। शिशुपाल वध महाकाव्य इनकी रचना है जो वृहत्त्रयी में परिगणित है।

अत: इस इकाई के अध्ययन से आप माघ रचित ग्रन्थों के संक्षिप्त वर्णन के आधार पर उनकी भाषा शैली, काव्य कला तथा संस्कृत साहित्य में उनका स्थान एवं अन्य साहित्यिक समस्त शैलियों, वर्णन प्रकारों का समुचित प्रयोजन बता सकेंगे। साथ ही यह भी समझा सकेंगे कि मूल रूप से माघ किस रीति के समर्थक कवि थे।

5.2 उद्देश्य

महाकवि माघ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह समझ सकेंगे कि –

1. माघ का संस्कृत साहित्य में स्थान क्या है ।
2. माघ की भाषा शैली क्या है ।
3. माघ किस कवि से प्रभावित है ।
4. शिशुपालवध में प्रधान रूप से किसका वर्णन है।
5. इस महाकाव्य में कितने सर्गों में कथावस्तु का वर्णन है ।
6. शिशुपाल वध का नायक – नायिका तथा अंगीरस कौन है।

5.3 माघ का परिचय एवं समय

शिशुपालवध के कर्ता का नाम 'माघ' है। डॉक्टर याकोवी का मत है कि जिस प्रकार 'भारवि' ने अपनी प्रतिभा की प्रखरता सूचित करने के लिए 'भा-रवि' (सूर्य का तेज) नाम रखा, उसी भॉति शिशुपालवध के अज्ञातनामा रचयिता ने अपनी कविता से भारवि को ध्वस्त करने के लिए 'माघ' का नाम धारण किया, क्योंकि माघमास में सूर्य की किरणे ठंडी पड़ जाती हैं। परन्तु यह कल्पना बिल्कुल निराधार जान पड़ती है शिशुपालवध के कर्ता का व्यक्तिगत नाम ही 'माघ' है, उपाधि नहीं। माघ की जीवन घटनाओं का पता 'भोजप्रबन्ध' तथा ''प्रबन्ध-चिन्तामणि' से लगता है। दोनों पुस्तकों में प्राय: एक –सी

कहानी दी गयी है। माघ के जीवन की रूपरेखा को हम जान सकते हैं।

जीवनी- माघ के दादा सुप्रभदेव वर्मलात नामक राजा के, जो गुजरात के किसी प्रदेश का शासक था, प्रधान मन्त्री थे। अत: माघ कवि का जन्म एक प्रतिष्ठित धनाढय ब्राह्मणकुल में हुआ था। इनके पिता 'दत्तक' बडे. विद्वान् तथा दानी थे । गरीबों की सहायता में इन्होंने अपने धन का अधिकांश भाग लगा दिया। माघ का जन्म भीन-माल में हुआ था। यह गुजरात का एक प्रधान नगर था, जो बहुत दिनों तक राजधानी तथा विद्या का मुख्य केन्द्र था। प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त ने 625 ई0 के आस-पास अपने 'ब्रह्म्गुप्तसिद्धान्त' को यही बनाया। इन्होंने अपने को 'भीनमल्लाचार्य लिखा है। हुवेनसांग ने भी इसकी समृद्धि का वर्णन किया है । पिता की दानशीलता का प्रभाव पुत्र पर भी पड़ा। ये भी खूब दानी निकले। राजा भोज से इनकी बड़ी मित्रता थी । राजा भोज का इन्होने अपने घर पर बड़े आवभगत से सत्कार किया। धीरे-धीरे अधिक दान देने से निर्धन हो गये। यह धारा का प्रसिद्ध राजा भोज नहीं हो सकता। इतिहास इसे असंभव सिद्ध कर रहा है। अत एव कुछ लोग 'भोजप्रबन्ध' की कथा पर विश्वास नहीं करते, परन्तु इतिहास में कम से कम दो भोज अवश्य थे। एक तो प्रसिद्ध धारानरेश भोज (1010-50 ई0) थे और दूसरे भोज सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुए। सम्भवत: इसी दूसरे राजा के समय में माघ हुए थे। 'भोजप्रबन्ध' ने दोनों भोजों की कथाओं में हड़बड़ी मचा डाली हैं।

माघ अपने मित्र भोज के पास आश्रय के लिए आये, 'भोज-प्रबन्ध' में लिखा है कि इनकी पत्नी राजा के पास 'कुमुदवनमपश्रिश्रीमदम्भोजखण्डमद्' आदि पद्यको, जो माघ –काव्यके प्रभात-वर्णन (11सर्ग) में मिलता है, ले गयी।इस पद्य को सुनकर राजाने प्रभूत धन दिया। उसे लेकर माघ-पत्नी ने रास्ते में दरिद्रों को बांट दिया। माघ के पास पहुँचने पर उसकी पत्नी के पास एक कोड़ी भी न बची रही, परन्तु याचकों का तॉंता बँधा ही रहा। कोई उपाय न देखकर दानी माघ ने अपने प्राणछोड़ दिये। प्रात:-काल भोज ने माघ का यथोचित अग्नि संस्कार दिया और बहुत दु:ख मनाया। माघ की पत्नी भी सती हो गयी।

माघ के जीवन की यही घटना ज्ञात है। यह सच्ची है या नहीं ,परन्तु इतना तो हम नि:सन्देह कह सकते है कि माघ परम्परानुसार एक प्रतिष्ठित धनाढय ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। जीवन के सुख की समग्र सामग्री इनके पास थी। पिता ने इन्हे शिक्षा दी थी। पिता के समान ही ये दानी तथा उपकारी थे। सम्भवत: भोज के यहॉं इनका बडा मान था।

समय - माघ के समय-निरूपण के लिए एक संदेह –हीन प्रमाण उपलब्ध हुआ है। आनन्दवर्धन ने शिशुपालवध के दो पद्यों को ध्वन्यालोक में उदाहरण के लिए उद्धृत किया है- रम्या इति प्राप्तवती: पताका: (3/53) तथा त्रासाकुल: परिपतन् (5/26) । फलत: माघ आनन्दवर्धन (नवम शती का पूर्वार्ध) से प्राचीन हैं। एक शिलालेख से इसका यथार्थ ज्ञान होता है। डॉ0 कीलहार्न को राजपुताने के 'वसन्तगढ' नामक किसी स्थान से 'वर्मलात' राजा का एक शिलालेख मिला है। शिलालेख का समय संवत्682, अर्थात् 625 ई0 है शिशुपालवधकी हस्तलिखित प्रतियों में सुप्रभदेव के आश्रयदाता का नाम भिन्न-भिन्न मिलता है। धर्ममान,

वर्मनाम, धर्मलात, वर्मलात आदि अनेक पाठ भेद पाये जाते हैं। भीनमाल के आसपास के प्रदेश में इस शिलालेख की उपलब्धि से डॉक्टर किलहार्न 'वर्मलात' को असली पाठ मानकर इस राजा तथा सुप्रभदेव के आश्रयदाता को यथार्थत: अभिन्न मानते हैं। अत: सुप्रभदेव का समय 625 ई0 से लेकर700 ई0 के पास है। अत एव इनके पौत्र माघ का समय भी लगभग 650 ई0 से लेकर700 ई0 तक होगा,अर्थात् माघ का आविर्भाव काल सातवीं सदी का उत्तरार्द्ध मानना उचित है।

ग्रन्थ

माघ का केवल एक ही महाकाव्य 'शिशुपालवध' है। श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चेदिनरेश शिशुपाल के वध का सांगोपांग वर्णनहै। यही 'शिशुपालवध' महाकाव्य का वर्ण्य विषय है। इसका प्रेरणास्रोतमुख्यतया श्रीमद्भागवत है, गौण रूप से महाभारत।वैष्णव माघ के ऊपर भागवत अपना प्रभाव जमाये था। फलत: उसी के आधार पर कथा का विन्यास है। सर्गो की संख्या 20 तथा श्लोको की 1650 (एक हजार छ: सौ पचास)।द्वारका में श्रीकृष्ण के पास नारद पधारकर दुष्टों के वध के लिए प्रेरणा देते हैं (1सर्ग) युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञमें जाने के लिए बलराम तथा उद्धव द्वारा मन्त्रणा द्वारा निश्चय किया जाता है (2सं0) श्रीकृष्ण दलबल के साथ इन्द्रप्रस्थ की यात्रा करते है (3सं0) तदनन्तर महाकाव्य के पूरक विषयों का वर्णन आरम्भ होता है। रैवतक का (4 सं0), कृष्ण के रैवतक-निवास का (5 सं0) , ऋतुओं का (6स0) ,वनविहार का (7स0), जलक्रीड़ा का (8स0) ,सूर्यास्त तथा चन्द्रोदयका (9स0) , मधुपान और सुरतका (10सं0), पाण्डवों से मिलन तथा सभा प्रवेश का (13 स0), राजसूययाग तथा दान का (14सं0),शिशुपाल द्वारा विद्रोहका(15 स0), दूतों की उक्त-प्रत्युक्ति का (16 सं0), सभासदों के क्षोभ तथा युद्धार्थ कवचधारण का (17 स0),युद्धका (18 तथा 19 स0) तथा श्रीकृष्ण और शिशुपाल के साथ द्वन्द्व युद्ध का वर्णन 20 सर्ग में निष्पन्न होता है। इस विषयसूची पर आपातत:दृष्टि डालने से स्पष्ट है कि लघुकाय वृत्त को परिवृंहित कर महाकाव्यत्व के निर्वाह के लिए माघ ने आठ सर्गो की योजना (4 सर्ग-11 सर्ग) अपनी प्रतिभा के बल पर की है। अलंकृत महाकाव्य की यह आदर्श कल्पना महाकवि माघ का संस्कृत साहित्य को अविस्मरणीय योगदान है, जिसका अनुसरण तथा परिबृंहण कर हमारा काव्यसाहित्य समृद्ध, सम्पन्न तथा सुसंस्कृत हुआ है।

माघ और भारवि

माघ के महाकवि होने में तनिक भी सन्देह नहीं है। माघ ने साम्प्रदायिक प्रेम से उत्तेजित होकर अपने पूर्ववर्ती 'भारवि' से बढ़ जाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। भारवि शैव थे, जिनका काव्य शिव के वरदान के विषय में है; माघ वैष्णव थे, जिन्होंने विष्णु-विषयक कहाकाव्य की रचना की। वह स्वयं अपने ग्रन्थ को 'लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्र-विषयक महाकाव्य की रचना की। वह स्वयं अपने ग्रन्थ को 'लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारू' कहते हैं। भारवि की कीर्ति को ध्वस्त करने में माघ ने कुछ भी उठा नहीं रक्खा। 'किरातार्जुनीय' को अपना आदर्श मानकर भी माघ ने

अपने काव्य में बहुत कुछ अलौकिकता पैदा कर दी है। किरात के समान ही माघ-काव्य भी मंगलार्थक 'श्री' शब्द से आरम्भ होता है । किरात के आरम्भ में 'श्रिय:कुरूणामधिपस्य पालनी' है, उसी प्रकार माघ के प्रारम्भ में 'श्रिय:पति: श्रीमति शासितुं जगत्' है । भारवि ने किरात में प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है । माघ ने इसी तरह अपने काव्य के सर्गान्त पद्योमें 'श्री' का प्रयोग किया है ।

शिशुपालवध तथा किरातार्जुनीय के वर्ण-कर्म में समानता है । दोनों महाकाव्यों के प्रथम सर्ग में सन्देश-कथन है । दूसरे सर्ग में राजनीति-कथन है। अनन्तर दोनों में यात्रा का वर्णन है । ऋतु-वर्णन भी दोनों में है- किरात के चतुर्थ सर्ग में तथा माघ के षष्ठ सर्ग में । पर्वत का वर्णन भी एक समान है- किरात के पॉचवें सर्ग में हिमालय का तथा माघ के चौथे सर्ग में रैवतक पर्वत का। अनन्तर दोनों में संध्याकाल, अंधकार, चन्द्रोदय, सुन्दरियों की जलकेलि- आदि विषयों के वर्णन कई सर्गो में दिये गये है। किरात के तेरहवें तथा चौदहवें सर्ग में अर्जुनतथा किरातरूपधारी शिव में बाण के लिये वाद-विवाद हुआ है, माघ के सोलहवें सर्ग में ऐसा ही विवाद शिशुपाल के दूत तथा सात्यकि के बीच हुआ है। किरात के पंद्रहवें तथा माघ के उन्नीसवें सर्ग में चित्रबंधों में युद्ध-वर्णन है। इस प्रकारसमता होने पर भी रसिक जन माघ के सामने भारवि को हीन समझते है-

तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदय:।

'माघे सन्ति त्रयो गुणा:।' उपमा, अर्थ-गौरव तथा पदलालित्य- इन तीनों गुणों का सुभग दर्शन ही में माघ की कमनीय कविता में होता है। बहुत से आलोचक पूर्वोक्त वाक्य को किसी माघ-भक्त पण्डित का अविचारितरमणीय हृदयोद्गार भले ही बतावें परन्तु वास्तव में पूर्वोक्त आभाणक में सत्यता है। माघ में कालिदास जैसी उपमाऐं भले न मिलें, फिर भी इनमें न सुन्दर उपमाओं का अभाव है, न अर्थगौरव की कमी । पदों का ललित विन्यास तो नि:सन्देह प्रशंसनीय है । माघ की 'पदशय्या' इतनी अच्छी है कि कोई भी शब्द अपने स्थान से हटाया नहीं जा सकता ।

माघ की विद्वत्ता

माघ केवल सरस कवि ही नहीं थे, प्रत्युत एक प्रकाण्ड सर्वशास्त्र –तत्वज्ञ विद्वान् भी थे। भारवि में राजनीति-पटुता अवश्य दीख पडती है, श्रीहर्ष में दार्शनिकउद्भटता अवश्य उपलब्ध होती है, परन्तु माघ में सर्वशास्त्रों का जो परिनिष्ठितज्ञान दृष्टिगोचर होता है वह उन दोनों कवियों में विरल है । उनमें भी पाण्डित्य है, परन्तु वह केवल एकाङ्गी है । परन्तु माघ का पाण्डित्य सर्वगामी है। माघ का श्रुति-विषयक ज्ञान अत्यन्त प्रशंसनीय है । प्रात:काल के समय इन्होने अग्निहोत्र का सुन्दर वर्णन किया है। हवनकर्म में आवश्यक सामधेनी ऋचाओं का उल्लेख है (11/41) ।वैदिक स्वरों की विशेषता भी आपको भली-भॉति मालूम थी । स्वरभेद से अर्थभेद हो जाया करता है इस नियम का उल्लेख मिलता है (14/24) । एक पद में होनेवाला उदात्त स्वर अन्य स्वरोंको अनुदात्त बना डालता है- एक स्वर के उदात्त होने से अन्य स्वर 'निधात' हो

जाते हैं। इस स्वर-विषयक प्रसिद्ध नियम का प्रतिपादन माघ ने शिशुपाल के वर्णन में बडी सुन्दर रीति से किया है - निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्त: स्वरानिव (2/95)। चौदहवें सर्ग में युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञ का बडा ही विस्तृत तथा सुन्दर वर्णन किया हुआ मिलता है। दर्शनों का भी विशिष्ट ज्ञानमाघ में दिखाई पडता है। सांख्य के तत्वों का निदर्शन अनेक स्थलों पर पाया जाता है। प्रथमसर्ग में नारद ने श्रीकृष्णचन्द्र की जो स्तुति की है (1/23) वह सांख्य के अनुकूल है। योगशास्त्र की प्रवीणता भी देखने में आती है।'मैत्र्यादिचित्तपरिकर्मविदो विधाय' आदि (4/45) पद्य में चित्तपरिकर्म, सबीजयो,सत्वपुरूषान्यथाख्याति योगशास्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं। आस्तिक दर्शनों को कौन कहे ? नास्तिक दर्शनों में भी माघ का ज्ञान उच्चकोटि का था। माघ बौद्धदर्शनों से भी भली-भॉति परिचित थे (2/28)। उसके सूक्ष्म विभेदों के भी ज्ञाता थे। वे राजनीति के भी अच्छे जानकार थे। बलराम तथा उद्धव के द्वारा राजनीति की खूबियॉ दिखलायी गयी हैं। माघ ने नाटयशास्त्र के विभिन्न अंगों की उपमा बडी सुन्दरता से दी है। माघ एक प्रवीणवैयाकरण थे। उन्होने व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों का भी उल्लेख उन्होने किया है। माघ सांख्योग के पारखी कवि हैं, तो श्रीहर्ष अद्वैत वेदान्त के मर्मज्ञ कवयिता है।माघ का ज्ञान ललित कलाओं में भी ऊँची कक्षा का था। वे संगीतशास्त्र के सूक्ष्म विवेचक थे (माघ 11/1)। जगह-जगह पर संगीत-शास्त्र के मूल तत्वों का निदर्शन कराया गया है। अलंकार-शास्त्र में माघ की प्रवीणता की प्रशंसा करना व्यर्थ है। वह तो कवि का अपना क्षेत्र है। माघ ने राजनीति के गूढ़ तत्वों का वर्णन किया है।

अभ्यास प्रश्न

1. शिशुपाल का वध किसने किया।

क. कृष्ण ख. रूक्मि ग. द्रुपद घ. बलराम

2. शिशुपाल वध किसकी रचना है।

क. माघ ख. भारवि ग. श्रीहर्ष घ. कोई नहीं

3. माघ के दादा का क्या नाम था।

क. सुप्रभदेव वर्मलात ख. प्रभदेव ग. सुकर्म घ. कीर्तिमान

4. 'ब्रह्मगुप्त सिद्धान्त' किसकी रचना है।

क. ब्रह्मगुप्त ख. भास्कराचार्य ग. कमलाकर भट्ट घ. वराहमिहिर

5. ब्रह्मगुप्त सिद्धान्त की रचना कब हुई।

क. 650 ई0 ख**. 625 ई0** ग. 635 ई0 घ. कीर्तिमान

6. माघ का जन्म कहॉ हुआ था।

क. महाराष्ट्र ख. मध्यप्रदेश ग. गुजरात घ.कोई नहीं

7. भारवि शब्द से तात्पर्य है –

क. चन्द्र की छाया ख. सूर्य की छाया ग. वृक्ष की छाया घ. किसी वस्तु की छाया

8. माघे सन्ति ....।

क. चतुर्गुणा ख. त्रयो गुणा: ग. पंच गुणा घ. षड् गुणा:

5.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको ज्ञात हुआ है कि माघ के महाकवि होने में तनिक भी सन्देह नहीं है। माघ ने साम्प्रदायिक प्रेम से उत्तेजित होकर अपने पूर्ववर्ती 'भारवि' से बढ़ जाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। भारवि शैव थे, जिनका काव्य शिव के वरदान के विषय में है; माघ वैष्णव थे, जिन्होंने विष्णु-विषयक महाकाव्य की रचना की । वह स्वयं अपने ग्रन्थ को 'लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारू' कहते हैं। भारवि की कीर्ति को ध्वस्त करने में माघ ने कुछ भी उठा नहीं रक्खा। 'किरातार्जुनीय' को अपना आदर्श मानकर भी माघ ने अपने काव्य में बहुत कुछ अलौकिकता पैदा कर दी है। किरात के समान ही माघ-काव्य भी मंगलार्थक 'श्री' शब्द से आरम्भ होता है। किरात के आरम्भ में 'श्रिय:कुरूणामधिपस्य पालनीं' है, उसी प्रकार माघ के प्रारम्भ में 'श्रिय:पति: श्रीमति शासितुं जगत् है। भारवि ने किरात में प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है। माघ ने इसी तरह अपने काव्य के सर्गान्त पद्योमें 'श्री' का प्रयोग किया है । शिशुपालवध तथा किरातार्जुनीय के वर्ण-कर्म में समानता है । दोनों महाकाव्यों के प्रथम सर्ग में सन्देश-कथन है। दूसरे सर्ग में राजनीति - कथन है। अनन्तर दोनों में यात्रा का वर्णन है। ऋतु-वर्णन भी दोनों में है- किरात के चतुर्थ सर्ग में तथा माघ के षष्ठ सर्ग में। पर्वत का वर्णन भी एक समान है- किरात के पॉचवें सर्ग में हिमालय का तथा माघ के चौथे सर्ग में रैवतक पर्वत का । अत: आप इस पाठ्यक्रम के समस्त खण्ड का अध्ययन करते हुये इस अन्तिम इकाई के अध्ययन के बाद वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, माघ एवं भारवि आदि समस्त कवियों के काव्य कला कौशल को बताने में सक्षम हो सकेंगे।

5.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क. **कृष्ण** 2. **माघ** 3. **सुप्रभदेव वर्मलात** 4. **क. ब्रह्मगुप्त** 5. ख**. 625 ई0** 6. ग. **गुजरात** 7. ख. सूर्य की छाया 8. ख. त्रयो गुणा:

5.6 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय
2. पुराण विमर्श – आचार्य बलदेव उपाध्याय- चौखम्भा सुरभारती
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ वाचस्पति गैरोला – चौखम्भा प्रकाशन

5.7 निबन्धात्मक प्रश्न

1. माघ और भारवि की कला में अन्तर स्पष्ट कीजिये ।
2. माघ का जीवन परिचय एवं समय लिखिये ।